CONTENTS
INDEX

TITLE	Page(s)
Education 2025: Student First **Jaita Mondal-** Assistant Professor Sai Mohan College of Education, Faridabad **Monica Chahar** Assistant Professor Rattan Singh Girls College of Education, Faridabad	2
An Analytical Study of Marketing Mix of Selected Vegetable oil units in Northern India **Anamika Bansal** Research Scholar Department of Management, Mewar University, Gangrar, Chittorgarh, Rajasthan	**9**
A Comparative Study Of Mental Health Of Teacher Educators Of Self Financed And Regular (Grant Aided) Colleges **Dr. Roopam Jain** Associate Professor Dewan College of Education. Meerut, U.P	**17**
A Study of Future Education: 'An Investment in Knowledge and Technology pays the best Interest' **Ms. Tanvi Kohli** Lecturer DIET Keshavpuram,Delhi	**29**
Ambitious Education Standards: India Vision 2025 **Ms. Shikha Kansal,** Assistant Professor, Dewan Institute of Management Studies, Meerut	**36**
सेतुबन्धम् नाटक में संस्कृति समन्वय **सुमित कुमार** शोध छात्र, संस्कृत विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ	**54**
Women Entrepreneur contribution to Indian Economy **Shilpi Jain** (Research Scholar) Faculty of commerce and Business Administration, D.N PG College Meerut Supervisor: Dr R.K Singhal, (D.N, P.G College)	**60**
Role of Human Resource management in self finance professional education in India—with special reference to Meerut Region **Deepak Sharma** Research Scholar Department of Management, Mewar University, Gangrar, Chittorgarh (Rajasthan)	**71**

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
ISSUE: 08 Vol: 02, No. 04 April – June 2017

सेतुबन्धम् नाटक में संस्कृति समन्वय

सुमित कुमार
शोध छात्र
संस्कृत विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

सेतुबन्धम् नाटक की अधिकारिक कथावस्तु महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण से ली गई है। सेतुबन्धम् नाटक का प्रधान उद्देश्य विभिन्न आर्य–अनार्य–रक्ष–वानर आदि की संस्कृति का समन्वय करना है और तत्कालिक प्रचलित शैव–शाक्त–वैष्णवादि सम्प्रदाओं का व्यावहारिक जीवन के साथ सामञ्जस्य स्थापित करना। नाटक संस्कृत साहित्य का एक गौरवपूर्ण अंग है। नाटकों ने इस साहित्य को वह महत्त्व प्रदान किया है। जिससे इसकी कीर्ति कौमुदी संसार भर में चमकने लगी है। काव्य की उपेक्षा नाटक की प्रतिष्ठा सदैव अधिक रही है। काव्य के आनन्द से वंचित रहने वाले व्यक्ति नाटक का मनोहर अभिनय देखकर असीम अलौकिक आनन्द की अनुभूति करते हैं। इसकी खोज में कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। काव्य श्रवण मार्ग को आकृष्ट करता है तथा अपना प्रभाव जमाता है, परन्तु नाटक नेत्र मार्ग से हृदय को चमत्कृत करता है। किसी वस्तु को देखने का आनन्द उसके सुनने की अपेक्षा कहीं अधिक होता ही है। काव्य में अनुभूति के लिए अर्थ को समझना आवश्यक होता है, परन्तु नाटक में इसकी आवश्यकता नहीं होती। इसलिए नाटक की समता चित्र से करते हुए आचार्य वामन ने कहा है–'सन्दर्भेषु दशरूपकम् श्रेयः। तद्धि चित्रम् चित्रपट्वद् विशेषाकल्यात्।' काव्य अलंकार सूत्र 1/330–31। यही कारण है कि साधारण व्यक्तियों के लिए भी काव्य की अपेक्षा नाटक का आकर्षण विशेष प्रभावशाली होता है। इसी से नाटक कवित्व की चरम सीमा माना जाता है–"नाटकान्तं कवित्वम्।"

भारतीय नाटकों की यह महती विशेषता है कि वे सर्वदैव नियमतः सुखान्त होते ही हैं। नाटक के प्रारम्भ में एवं मध्य में कितनी भी दुःखद तथा करुणोत्पादक घटनाएँ प्रदर्शित की जायें उनका अन्त सदैव सुखद, कल्याणकारक तथा मंगलसाधक ही होता है। भारतीय दर्शन आशावादी है। उसका यह दृढ़ मन्तव्य है कि संसार का भ्राम्यमाण चक्र अन्ततोगत्वा सौन्दर्य तथा आनन्द के उत्पादन में समर्थ होता है। मार्ग के अनेक विघ्न क्लेश तथा कष्ट उठाने का प्रसंग भले ही हमारे जीवन का दुःखद तथा क्लेशमय बनाये परन्तु गन्तव्य स्थान–जीवन का उद्देश्य सदा ही आनन्द का निकेतन होता है। इसी

आशावादिता से प्रेरित होकर भारतीय नाटककार नाटक के आदि को आशीर्वाद से प्रारम्भ करते हैं तथा अन्त में विश्वाशान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

संस्कृति साहित्य के संवर्धन में एक साथ तीन धारायें प्रवाहित होती प्रतीत होती हैं। एक ओर जहाँ रामायण, महाभारत तथा पुराण साहित्य के उपजीव्य बनाकर प्रचुर एवं समृद्ध साहित्य सृजन नहीं वहीं पर बौद्ध दर्शन की मान्यताओं के पोषक रूप में समानान्तर प्रचुर पालि साहित्य का विकास हुआ। जैन धर्म जो कि बौद्ध धर्म से भी प्राचीन है उसे अपनी लेखनी का विषय बनाते हुए अनेक जैन कवियों ने दर्शन, साहित्य तथा काव्यशास्त्र के क्षेत्र में पर्याप्त योगदान दिया।

सेतुबन्धम् में यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिकता का पुट परिलक्षित नहीं होता। किन्तु हमारी धार्मिक भावनाओं के प्रतीक भगवान महादेव, गंगा, आर्यधर्म की शिक्षायें इस नाटक में समुचि रूपेण पिरोई गई है। इसमें अहिंसा, क्षमा, शुचिता आदि विशिष्ट गुणों का चित्रण किया गया है। इसमें सत्यता का आश्रय लेकर पुरुषार्थ करने पर बल दिया गया है क्योंकि पुरुषार्थ ही सफलता की कुंजी है, जबकि पूर्णतया श्रृंगारिक नाटकों में सद्गुणों का विकास सम्भव नहीं है क्योंकि ये नाटक मनोरंजन करने में तो सफलता प्राप्त कर सकते हैं लेकिन चिन्तन मनन में इसका पूर्ण सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता और बिना चिन्तन–मनन के सद्गुणों का विकास सम्भव नहीं। सेतुबन्धम् हमें स्वस्थ चिन्तन की नई दिशा प्रदान करता है तथा इस बिना पुरूषार्थ किये हम अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। सत्य को आश्रय लेकर पुरूषार्थ करने वाले व्यक्ति के जीवन में बाधाएँ तो आती हैं लेकिन अन्ततः वह अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेता है।

साहित्य संस्कृति का अटूट वाहन है। यदि संस्कृति के भीतर आध्यात्मिकता की भव्य– भावनाएँ उभरती है तो उस देश तथा जाति का साहित्य कभी आध्यमिकता से अनुप्राणित हुए बिना नहीं रह सकता। साहित्य सामाजिक भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतया सक्षम है। इस दृष्टि से साहित्य का दर्पण ही नहीं वरन् वह सांस्कृतिक आचार–विचारों का प्रबल प्रचारक भी है साथ ही वह संस्कृति के सन्देश को जनता के हृदय तक पहुँचाने का कार्य भी करता है।

सेतुबन्धम् नाटक में अनेक स्थलों पर सर्वधर्मसमन्वयात्मक जीवनदृष्टि को अभिव्यक्त किया गया है। सर्वप्रथम नाटक के तृतीय अंङ्क में रावण–मारीच के संवाद में मारीच का रावण से कहना कि–"आप अन्यथा न सोचे! संस्कृति के एक पुष्पस्तवक में गूँथे हुए अनेक धर्म पुष्प अधिक शोभित होते हैं। देखो तात्! हमारे धर्म में प्रचलित मूर्ति पूजा मातृ देवता अश्वत्थ अर्चना आर्यों ने प्रथम ही स्वीकृत

कर ली है। हमारे आदि देव शिव को आर्य धर्म में महादेवत्व प्राप्त हैं। उन्होंने लिङ्गार्चना का भी प्रचार किया है। अब तो आर्य संस्कृति का स्वरूप हमारी संस्कृति के बिना अपूर्ण है। अतः तात! ऐसा करे जिससे सर्वधर्म विकास में कोई बाधा न उत्पन्न हो यही है मेरे जीवन की चरम अनुभूति।"[1]

चतुर्थ अङ्क के प्रारम्भ में तापस कुमार प्रियव्रत और सत्यव्रत का संवाद एक महत्वपूर्ण तथ्य को प्रकट करता है कि–"वस्तुत यह संसार की प्रक्रिया निरन्तर परिवर्तनशील दिखाई देती है जो आज उन्नत है कल उसका पतन भी सम्भव है। अनार्य सभ्यता शान्त जीवन दर्शन के कारण आर्यों के साथ युद्ध करती हुई पराजित हो गयी। शनैः शनैः इस राष्ट्र में दो संस्कृतियों का मिश्रण हो गया। प्रायः आजकल आर्य–संस्कृति की अनेक समुन्नत प्रक्रिया अनार्य संस्कृति की दी हुई है।[2] प्रियव्रत–तो ऐसा कहो कि यह आजकल जो आर्य संस्कृति विद्यमान है वह आर्य–अनार्य संस्कृतियों का मिश्रण ही है। क्योंकि युग के अनुकूल ही धर्म रचना युग धर्म की समता प्रतिपादन में समर्थ होती है। इस सम्न्वय से ही इस द्वीप में कल्याण हो।[3] सत्यव्रत–ऐसा ही होवें! सर्व धर्म समन्वय से संसार में मानव धर्म का उत्थान होना चाहिए।"

पञ्चम अंङ्क में प्रियतमा सीता के हरण के पश्चात् विहर से अति व्याकुल मर्यादा पुरूषोत्तम राम अपने विश्वबन्धुता के प्रसार के प्रमुख उद्देश्य को नहीं भुलते और कहते हैं–"यह कैसे भुला दिया जाये कि हम लोगों को यह हृदयों पर विजय का अभियान है। युग धर्म की साधना में लोगों का आर्य धर्म के साथ सूत्र संधान करते हुए हम लोग विश्व बन्धुत्व के प्रसार के लिए यहाँ आए हैं।"[4]

कवि ने कथामुख के नवम् पद्य में संस्कृति समन्वय के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए सेतुबन्धम् नाटक की रचना के विषय में कहा है–

आर्याणामिह हिंसकाक्रमणतो भीता दिशं दक्षिणां,
या आर्येतरजातयो बहुविधाः शान्ताः प्रयाताः पुरा।
रामो धर्मसमन्वयस्य च तयोः सवर्धयन् प्रक्रियाम्,
सेतुं संस्कृतिमध्य एवमकरोत् तन्निर्निमतं नाटकं।।[5]

षष्ठम् अङ्क में लक्ष्मण का यह कथन कि–"कोई चन्द्रमा को कलङ्किकत कहता है, न केवल आर्यावर्त्त की अपितु विश्व संस्कृति की समुन्नति के लिए आर्य का जन्म हुआ है।"[6]

सप्तम् अंङ्क में हनुमान का सर्व धर्म समन्वय के महत्व को उद्घटित करते हुए रावण से कहना कि–"हे राक्षसेन्द्र! मेरा मत है कि हिंसावृत्ति को छोड़कर सर्वधर्म समन्वय में जो करने योग्य है

वही कीजिए।"[7] नवम् अंङ्क में जब सुग्रीव–नलादि सेतु का निर्माण कर रहे थे तभी रावण द्वारा निष्कासित विभीषण श्री राम की शरण में आता है तो राम–हनुमान–सुग्रीव का संवाद–

हनुमान्–स्वामिन्! सेतु निर्मित हो गया।

राम–तात! कैसा (सब आश्चर्य से देखते हैं)

हनुमान्–आर्य–अनार्य और राक्षसों का संस्कृति–सेतु।

राम–तात! लङ्केश्वर का अनुज शरण में आया है।

सुग्रीव–रावण से निष्कासित यह विभीषण आपके स्नेह के लिये मित्रता की याचना करता सा प्रतीत होता है।

हनुमान्–अतएव आर्य ने, विभिन्न संस्कृतियों के सागर पर सेतु निर्मित कर दिया। आज वनवास का परिश्रम सफल हो गया क्योंकि–

"भिन्न मार्गों पर चलने वाले आर्य, वानर और राक्षसों के सर्वधर्म समन्वय में आप सेतु बन गए हैं।"

सुग्रीव–अपने बन्धु लङ्केश को छोड़कर विभीषण जब आपके पास यहां आ गया तभी सद्धर्म नीति, प्रतिभा और विवेक इन सभी ने रावण का परित्याग कर दिया।[7]

हनुमान–विभीषण के आने से हमारा अभीष्ट सिद्ध हो गया। राघवेन्द्र के संस्कृति समन्वय यश की यह पूर्णाहुति है। क्योंकि–

धर्म–समन्वय मार्ग में विभीषण ने आज सेतु निर्मित कर दिया, जो यह राक्षसों के कुलकेतु हम लोगों के हित के लिये यहां आ गए।[10]

उपरोक्त संवादों में सर्वधर्म समन्वय की भावना को उद्घटित किया गया है।

सेतु निर्माण का कार्य पूरा होने पर लक्ष्मण का कथन–"राम ने केवल वानर और राक्षसों के ही अपने–अपने धर्म के मध्य सेतु निर्माण नहीं किया, उन्होंने कर्मयोग से मानवता के हित में महासागर पर सेतु बांध दिया।[11] यहाँ पर विश्वबन्धुता की भावना दृष्टिगोचर होती है।

लङ्काभियान विजय पश्चात् अयोध्या जाते समय सेतु पर महादेव के मन्दिर को देखकर विभीषण का कथन–"सेतुबन्ध पर स्थित यह देव, आर्य, वानर और राक्षसों की संस्कृति के स्वयं सेतु हो गये हैं।"[12] यहां पर विभिन्न संस्कृतियों के मध्य 'महादेव' ने सेतु का कार्य किया है। लक्ष्मण ने महर्षि अगस्त्य को दक्षिणापथ में संस्कृति का सेतु कहा है।[13]

नवम् अङ्क में विभीषण का राम की शरण में आने पर हनुमान का कहना कि, "मार्गों पर चले वाले आर्य, वानर और राक्षसों के सर्वधर्म समन्वय में आप सेतु बन गए हैं।"

अतः यह नाटक विभिन्न संस्कृतियों का पोषक है।

निष्कर्ष–इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि विभिन्न स्थलों पर, विभिन्न परिस्थितियों में सर्व धर्म संस्कृति समन्वय की भावना ही नाटक का प्रधान उद्देश्य है। नाटक का यह गहनतम् अध्ययन करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि दक्षिणापथ में रामेश्वर महादेव, ऋषियों में महर्षि अगस्त्य, आर्यों में मर्यादा पुरूषोत्तम राम, अनार्यों और वानरों में सुग्रीव और राक्षसों में विभीषण सर्वधर्म संस्कृति समन्वय के प्रतीक रूप में स्थित हैं। अतः नाटक का नाम 'सेतुबन्धम्' पूर्णतः सारगर्भित है और "नाम कार्यं नाटकस्य गर्भितार्थप्रकाशकमि" इस लोकोक्ति का अनुसरण करता है।

सन्दर्भ सूची

1. मारीचः–नान्यथा चिन्तयित्वा संस्कृतेरेकस्मिन् पुष्पस्तबके गुम्फितानि विविधानि धर्मपुष्पाणि बहुतरं शोभन्ते,
2. सत्यव्रतः–शनैः शनैरस्मिन् राष्ट्रे संस्कृति–द्वयस्य मिश्रणं जातम्।
   प्रायेणाधुनाऽऽर्यसंस्कृतेरनेकाः समुन्नतप्रक्रिया अनार्यसंस्कृति प्रदत्ताः सन्ति।
3. प्रियव्रतः–धर्म रचना युग–धर्मसमत्व–प्रतिपादने शक्त। अनने समन्वये–नैवास्मिन् द्वीपे श्रेयः सम्पत्यस्यते।
4. रामः–युगधर्मसंधानेऽत्र जनानामार्यधर्मेण सह सूत्रं संधानयन्तो विश्वबन्धुता प्रसारायं समागता वयम्।।
5. सेतु 1/9
6. लक्ष्मणः–क एष चन्द्रकलङ्कमपवदति! न केवलमार्यावर्तस्य विश्वसंस्कृतिसमुन्नतये जन्मार्यस्य।
7. हनुमानः–हिंसावृत्ति परित्यज्य सर्वधर्म–समन्वये।
   यद् विधेयं तथा कार्यं राक्षसेन्द्र! मतं हि मे।।7/5।।
8. हनुमान्–भिन्नमार्ग–प्रवृत्तानामायिवानर–रक्षसाम्।
   अभूदार्यवरः सेतुः सर्वधर्मसमन्वय।।9/4।।
9. सुग्रीवः–लङ्केशमुत्सृज्य यदा स्वबन्धुं,
   विभीषणस्त्वामिह संप्रायतः।

सद्धर्मनीतिप्रतिभा–विवेकाः

सर्वे तदा रावणमुत्ससर्जुः।।9/6।।

10. हनुमान्–धर्मसमन्वयमार्गे विहितः सेतुर्विभीषणेनाद्य।

यद् रक्षः कुलकेतुः प्राप्तो नः प्रीतये ह्येषः।।9/7।।

11. लक्ष्मणः–न केवलं वानरराक्षसानां,

रामेण सेतुर्विहितः स्वधर्मे।

स कर्मयोगेन बबन्धसेतुं,

महोदधौ मानवता–हिताय।।9/20।।

12. विभीषणः–आर्याणां वानराणां च राक्षसानां च संस्कृतेः।

सेतुबन्धे स्थितो देवः सेतुरभूदसौ।।10/33।।

13. दक्षिणायथे संस्कृतिसेतुरसौ महर्षिरगस्त्य इत एवाभिभवर्तते

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522